✺ 22 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] पहली-पहली बात कहते हैं आत्मा होकर बैठो। अपने को शरीर नहीं, आत्मा समझ बैठो। आत्मा ही इन आरगन्स को चलाती है। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझने से परमात्मा याद आयेगा। अगर देह या आई तो देह का बाप याद आयेगा इसलिए बाप कहते हैं– आत्म-अभिमानी बनो। बाप पढ़ा रहे हैं, यह है पहला पाठ। तुम आत्मा अविनाशी हो, शरीर विनाशी है। 'हम आत्मा हैं' यह पहला शब्द याद नहीं करेंगे तो कच्चे पड़ जायेंगे। मैं आत्मा हूँठ, शरीर नहीं हूँ– यह शब्द इस समय बाप पढ़ाते हैं। आगे कोई भी पढ़ाते नहीं थे।

2] देवतायें खाना बहुत थोड़ा बहुत हैं क्योंकि खुशी है ना इसलिए कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं।

3] बाप आकर समझाते हैं अभी तुम्हारा लंगर भक्ति मार्ग से उठा, अब ज्ञान मार्ग में चला है। बाप कहते हैं मैं तुमको जो ज्ञान देता हूँ वह प्राय: लोप हो जाता है।

4] गायन भी है आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल.... जब वहाँ शान्तिधाम में है तो उस मिलन में कोई फायदा नहीं होता। वह तो सिर्फ पवित्रता वा शान्ति का स्थान है। यहाँ तो तुम जीव आत्मायें हो और परमात्मा बाप उनको अपना शरीर नहीं है, वह शरीर धारण कर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं।

5] ब्रह्माकुमार-कुमारियों की शादी होती नहीं। यह भी बाप समझाते हैं कैसे गिर पड़ते है, काम अग्नि जलाती है। परन्तु डर रहता है एक बार गिरा तो की कमाई चट हो जायेगी। काम से हारा तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। कमाई कितनी बड़ी है।

✺ योग-

1] तुम अभी बाप के सम्मुख बैठे हो। बेहद के बाप को याद करने से बेहद की बादशाही भी जरूर याद आयेगी। ऐसे बाप को कितना प्यार से रेसपान्स करना चाहिए। बाप तुम्हारे बुलाने से आया है।

2] पाप कटने की युक्ति बाप बतलाते हैं कि मामेकम् याद करो और कोई को याद नहीं करना है। लक्ष्मी-नारायण को भी याद नहीं करना है। तुम जानते हो इस पुरूषार्थ से हम यह पद पा रहे हैं।

✺ धारणा-

1] जब तुम किसको समझाते हो, जो-जो तुमसे प्रश्न पूछते हैं उस पर आपस में बैठना चाहिए , जो होशियार हैं उनको भी बैठना चाहिए। तुमको टाइम मिलता है दिन के समय। ऐसा नहीं कि भोजन खाते हैं इसलिए नींद का नशा आये। जो बहुत खाना खाते हैं उनको नींद का आलस्य आता है। दिन में क्लास करना चाहिए– फलाने ने यह यह पूछा, हमने यह रेसपॉन्स किया। प्रश्न तो भिन्न-भिन्न पूछेंगे। उनका रेसपॉन्स भी चाहिए रीयल। देखना चाहिए उनको कशिश में लाया, सेटिस्फाय हुआ? नहीं तो फिर करेक्शन निकालनी चाहिए। जो होशियार हैं, उनको भी बैठना चाहिए। ऐसे नहीं, खाना खाया जल्दी नींद आये।

✺ सेवा-

1] मीठे बच्चे – आत्म-अभिमानी बनो, मैं आत्मा हूँ शरीर नहीं, यह है पहला पाठ, यही पाठ सबको अच्छी तरह पढ़ाओ।

2] ज्ञान की बातें बड़ी खुशी-खुशी से सुनाओ, लाचारी से नहीं। तुम आपस में बैठकर ज्ञान की चर्चा करो, ज्ञान मनन-चिंतन करो फिर किसी को सुनाओ। अपने को आत्मा समझकर फिर आत्मा को सुनायेंगे तो सुनने वाले को भी खुशी होगी।

3] यह ज्ञान की बातें तो बड़ी खुशी से सुननी-सुनानी चाहिए। समझाने में भी सहज होगा।

4] तुम भाषण भी ऐसा करो, जो एक्यूरेट किसी की भी बुद्धि में बैठ जाए।